निवाली आश्रम

इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट

3844

निवाली आश्रम : गौरवशाली समाज का गौरव

महिला व बाल विकास विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
द्वारा प्रायोजित

संयुक्त राष्ट्र संघ बालकोष, नयी दिल्ली

की सहायता से

इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट
5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली-110002

निवाली आश्रम : गौरवशाली समाज का गौरव

घर परिवार में अक्सर लड़की का लालन-पालन दूसरे ढंग से होता है । कई क्षेत्रों में लड़की के संदर्भ में स्कूली शिक्षा को अनावश्यक या थोड़ा गौण ही माना जाता है । इस दृष्टिकोण के पीछे कई तरह के सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारण रहे हैं । लड़की के प्रति यह दृष्टिकोण कम ज्यादा हो सकता है लेकिन उसके प्रति भेदभाव और उपेक्षा का बर्ताव प्रायः हर स्तर पर बना रहता है-- गांव हो या शहर, घर हो या बाहर लड़की का जीवन लड़के से भिन्न परिस्थिति और वातावरण के बीच पनपता है । यों तो कहा जाता है कि हमारा समाज आधुनिक कहे जाने वाले मूल्यों को अपना रहा है और इसी के अंतर्गत स्त्री-पुरुष समानता के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है । ढेर सारे कानून हैं जो ऐसा वातावरण बनाने में भी सहायक हो सकते हैं, लेकिन फिर भी स्त्री - पुरुष के बीच की असमानता दूर होती नहीं दीखती ।

समानता का यह सपना भला कैसे पूरा होगा ? शिक्षा के माध्यम से ? या जन-जागरण से ? दोनों से या पूरे समाज के स्तर पर उठने वाले एक बड़े आंदोलन से ?

शिक्षा के प्रयास अक्सर औपचारिक स्तर पर कुछ जानकारी देकर अपना काम पूरा मान लेते हैं तो दूसरी तरफ जन-जागरण या चेतना बढ़ाने के प्रयोग उन मूल्यों को सिखाते हैं जिनसे कोई भी समाज अपनी गति बनाये रखते हुए उन्नति करता है । यों यदि शिक्षा और उसे देने वाली पद्धति सचमुच अपने समाज से विमुख नहीं हो तो शिक्षा और चेतना बढ़ाने में कोई विशेष अंतर नहीं होना चाहिए । लेकिन अब तक का अनुभव बताता है कि आधुनिक मानी जाने वाली शिक्षा ऊपर से यही सब करते दिखते हुए भी ऐसा नहीं कर पाती ।

यह भी सही है कि पिछले दौर में थोड़े-थोड़े अंतर पर शिक्षा की इन कमियों को सुधारने के लिए कई प्रयास हुए-- पाठ्यक्रम में नयी तरह के

परिवर्तन आये हैं, नये-नये विषय बढ़े हैं, उनको पढ़ाने के तरीके में परिवर्तन किये गये हैं और साथ ही मूल्यांकन की पद्धति भी बदली है । फिर भी जिसे हमने मूल धारा माना है, उसमें पढ़-लिखकर समाज का कोई वर्ग शामिल ही हो जायेगा ऐसा नहीं दिखता । दूसरे शब्दों में कहें तो पढ़-लिख जाना मूल धारा में शामिल होने की गारंटी नहीं दिखती ।

यह अपने आप में एक बड़ी बहस का मुद्दा बन सकता है कि यह मूल-धारा क्या है ? जैसे छोटी-छोटी असंख्य नदियां बिना अपना अस्तित्व, अपनी पहचान और अपना महत्व खोये लगातार बहते हुए बड़ी नदी में जा मिलती हैं, उसी तरह एक बड़े समाज के विभिन्न अंग क्या अपना-अपना अस्तित्व बनाये रखते हुए भी मूल धारा को पुष्ट कर सकते हैं ?

गांधीजी ने देश की आजादी की लड़ाई जैसे एक बड़े काम में व्यस्त रहते हुए भी अपने समय का एक बहुत बड़ा हिस्सा शिक्षा के प्रयोगों पर लगाया था । उन्होंने शिक्षा को महज एक तरह के यांत्रिक औपचारिक शिक्षण से अलग करके, उसे छोटे-मोटे तराजू पर कैरियर या पैसा कमाने के माध्यम से अलग कर सफल जीवन की बुनियाद के रूप में रखने की कोशिश की थी । उनकी यह "सफलता" निजी जीवन से निकलती हुई पारिवारिक सफलता को फैलाते हुए एक सामाजिक सफलता से कम की मांग नहीं करती । उनके लिए वैसी ही शिक्षा सचमुच शिक्षा थी जो जीवन को एक सार्थकता दे केवल आर्थिकता नहीं, केवल आजादी के अधिकार नहीं, उन पर कर्तव्य की मर्यादा भी बांधे, और बुद्धि तथा श्रम का सम्मानजनक मेल भी करे ।

आज भी देश में कुछ जगहों पर ऐसी संस्थाएं और लोग गांधी जी के शिक्षण विषयक विचारों को लेकर समाज के विभिन्न अंगों के बीच में काम कर रहे हैं । लग सकता है कि प्रचलित शिक्षा पद्धति से अलग होकर चलने वाली ऐसी संस्थाएं संभवत: अपने छात्र-छात्राओं के साथ न्याय नहीं कर पातीं और उन्हें समाज में व्यापक तौर पर चल रही शिक्षा पद्धति से कुछ अलग हटाकर समाज से काट लेती हैं । क्या यह सही है ?

इस बात को समझने के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट ने ऐसी दो संस्थाओं को चुना जो प्रचलित शिक्षण के तौर-तरीकों से कुछ अलग दिखती हैं । इनमें से एक है उत्तरप्रदेश के पर्वतीय जिले अल्मोड़ा जिले में लक्ष्मी आश्रम और दूसरा है मध्यप्रदेश के वनवासी क्षेत्र पश्चिम निमाड़ जिले का निवाली कन्या आश्रम । इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस बात को समझना है कि शिक्षा का ऐसा अवसर इन पिछड़े माने गये इलाकों के पिछड़े माने गये समाज के वर्गों की लड़कियों को किस हद तक आगे लाता है और बिना अपने समाज से काटे उन्हें एक स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करता है, एक ऐसा स्वतंत्र व्यक्तित्व जो अपने घर से लेकर समाज तक अपने कर्तव्य और अधिकारों का बोध कराते हुए उन्हें एक सार्थक जीवन जीने का अवसर देता है । और अगर सचमुच यह शिक्षा उन्हें ऐसा अवसर देती है तो क्या है उसका ढांचा और क्या है उसमें छिपी बारीकियां जिससे कठिन-सा दिखने वाला यह लक्ष्य साधा जा रहा है ।

काम का तरीका :

निवाली आश्रम के इस अध्ययन का काम यों तो जनवरी 88 में शुरू हुआ । लेकिन इंस्टीट्यूट को अनेक कारणों से निवाली आश्रम की विभिन्न गतिविधियों को पास से देखने समझने का अवसर 8-10 वर्ष पहले भी मिला था । सन् 80 में इंस्टीट्यूट देश भर में महिलाओं के बीच काम करने वाली कुछ चुनी हुई संस्थाओं की एक सूची तैयार कर रही थी । उसी सिलसिले में निवाली आश्रम का प्रारंभिक अध्ययन हुआ था । फिर उसके दो वर्ष बाद इंस्टीट्यूट ने निवाली आश्रम के साथ इस वनवासी क्षेत्र में वनीकरण और उससे जुड़ी एक अच्छी पौधशाला को तैयार करने में भी मदद की । फिर उसी वर्ष इंस्टीट्यूट ने इस क्षेत्र में वनवासी हस्तकला को बढ़ावा देने के काम में निवाली आश्रम का साथ दिया और इसी कोशिश के कारण सन् 1984-85 में आश्रम अपने आसपास के कारीगरों की चीजों को लेकर दस्तकार बाजार के माध्यम से देश के कुछ बड़े शहरों में बिक्री के लिए

आगे आया ।

इस तरह आश्रम और इंस्टीट्यूट के 10 वर्ष पुराने यह संबंध इस अध्ययन को इतने कम समय में ठीक से पूरा करने का आधार बन सके ।

जनवरी में काम शुरू होने और निवाली जाने से पहले इंस्टीट्यूट ने आश्रम की स्थापना, इतिहास और प्रारंभिक विस्तार तथा उस दौर में आने वाली अड़चनों का एक ठीक लेखा-जोखा तैयार किया । प्रस्तुत अध्ययन में यह सब भले ही विस्तार से न दिया गया हो लेकिन इस प्रारंभिक तैयारी से अध्ययन में लगे कार्यकर्ताओं की आश्रम के प्रति एक ठीक समझ विकसित हो सकी है ।

इसी दौरान इंस्टीट्यूट ने आश्रम से जुड़े कार्यकर्ताओं, छात्राओं, भूतपूर्व छात्राओं, आश्रम के आसपास के विभिन्न वर्ग के अधिकारियों, नागरिकों, ग्रामीणों और ऐसे लोगों से भी चिट्ठी पत्री के माध्यम से संपर्क किया जो किसी न किसी समय आश्रम से जुड़े रहे हैं और उसका किसी न किसी रूप में अध्ययन वगैरह करते रहे हैं ।

इस प्रारंभिक तैयारी के बाद निवाली क्षेत्र की यात्रा की गयी । उस दौरान आश्रम में उपलब्ध पुरानी रिपोर्ट, दस्तावेज और आश्रम पर किये गये अन्य अध्ययनों के माध्यम से जितनी भी जानकारी हो सकी, उतनी एकत्र की गयी । इसी यात्रा के दौरान इंदौर में रहने वाली आश्रम की भूतपूर्व छात्राओं और कार्यकर्ताओं से संपर्क किया गया, जो किसी समय आश्रम की देखरेख और संचालन से जुड़े रहे थे ।

दूसरी यात्रा मार्च के अंतिम हफ्ते में की गयी और उस दौरान आश्रम की विभिन्न आयु की लड़कियों, विभिन्न विषयों की शिक्षिकाओं, विभिन्न गतिविधियों की संचालिकाओं, आश्रम और स्कूल की प्राचार्या, सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल की शिक्षिकाओं तथा निवाली कस्बे के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों के साथ विस्तृत चर्चा की गयी । इसी यात्रा में आश्रम की विभिन्न गतिविधियों के चित्र आदि भी खींचे गये हैं ।

वनवासी कन्या : बोझ नहीं

अप्रैल-मई में उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह प्रस्तुत अध्ययन तैयार किया गया है । जैसा कि आप इसमें पायेंगे निवाली आश्रम वनवासी समाज की कन्याओं के बीच में शिक्षा का काम कर रहा है और यह समाज परंपरागत रूप से बहुत स्वावलंबी रहा है-- स्त्रियां अन्य समाजों के मुकाबले कहीं अधिक स्वतंत्र होती हैं । यहां कन्या का जन्म परिवार के लिए विशेष प्रसन्नता का कारण बनता है क्योंकि वनवासी समाज की लड़की परिवार पर किसी भी उम्र में बोझ नहीं बनती । आयु की हर अवस्था में, जीवन के हर क्षेत्र में वह पुरुष के साथ सचमुच कंधे से कंधा मिलाकर कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार रहती है । उसे दहेज नहीं देना पड़ता । भगौरिया जैसे त्यौहारों में वह स्वतंत्र रूप से अपना वर चुन लाती है और जीवन संगिनी के रूप में उसे अपनाने से पहले वर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपनी सामर्थ्य भर वधू के परिवार को कुछ देता ही है, वह भी सहर्ष । इसमें किसी भी तरह का दबाव नहीं रहता ।

लेकिन एक ऐसा खुला हुआ, खिला हुआ हमारा यह समाज पिछले दौर में भयंकर संकट से गुजरा है । उसके जीवन का आधार--वन उससे छीना जा चुका है । समाज संचालन की उसकी अपनी परंपराएं, संस्थाएं, विधाएं मिटा दी गयी हैं । ऐसे संकट से गुजरते हुए समाज के बीच में शिक्षा के अवसर जुटाना, उस शिक्षा को उनके उस समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ढालना कोई सरल काम नहीं है । इसमें कई कमियां भी हो सकती हैं, कुछ कसर छूट सकती है लेकिन उसकी जिम्मेदारी किसी एक अकेले आश्रम की नहीं है । वह तो इस बात पर निर्भर करेगा कि अपने आपको मूलधारा में मानने वाला समाज आज अपने ही अंगों को किस ढंग से देखता है । यहां पर आकर यह प्रश्न उतना शैक्षणिक नहीं रह जाता जितना कि राजनैतिक बन जाता है ।

निवाली : नींव ऐसे रखी गयी

सन् 1952 की बात है । गांधी जयंती के अवसर पर गांधी स्मारक निधि ने मध्यप्रदेश के माँडव में एक शिविर आयोजित किया था । इसमें भाग लेने दूर-दूर से महिला कार्यकर्ता आयी थीं । इस वनवासी क्षेत्र में इन कार्यकर्ताओं ने शिविर के दौरान वनवासी स्त्री के कष्ट देखे । इन्हीं कार्यकर्ताओं में थीं कांता बहन और लीला भंडारी । दोनों ने गरीबी और तिस पर अन्याय की ऐसी भयंकर परिस्थिति देखकर मन ही मन संकल्प किया कि वे इन्हीं वनवासियों के बीच में अपना जीवन लगायेंगी । इस तरह 27 मार्च 1953 को निवाली गांव में एक छोटा-सा आश्रम शुरू हुआ । हर तरह के अभाव और विपरीत परिस्थितियों के बीच शुरू हुई यह छोटी सी गतिविधि कांता बहन के त्याग, प्रेम और साधना के बल पर वनवासी लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में आज न सिर्फ मध्यप्रदेश की बल्कि देश की एक प्रमुख संस्था बन गयी है ।

निवाली : परिचय

सतपुड़ा की पहाड़ियों से घिरा निवाली वनवासी क्षेत्र इंदौर-खेतिया रोड पर इंदौर से लगभग 185 कि.मी. दूर स्थित है। पश्चिम निमाड़ जिले का यह छोटा-सा गांव निवाली अभी कुछ ही पहले तक घने जंगलों के बीच था । लेकिन पिछले दौर में अंधाधुंध कटाई और तस्करी के कारण सारी पहाड़ियां अपने कीमती वन खो चुकी हैं । जो गति पिछले वर्षों में वनों की हुई वैसी ही दुर्गत वनवासियों की भी होनी शुरू हो गयी थी । उस दौर में न केवल वनवासियों का जीवन आधार--वन उजड़ा बल्कि अपने ही लोगों द्वारा किये गये अन्याय के कारण उनका विश्वास भी डगमगा गया । कोई भला उनके लिए नि:स्वार्थ काम क्यों करेगा ? यही प्रश्न निवाली आश्रम की स्थापना के समय भी वहां के लोगों के मन में गूंजता रहा था ।

सन् 1953 में जब आश्रम शुरू हुआ तो उसके लिए कोई जगह तो थी नहीं। लेकिन कांता बहन और लीला बहन को उस समय सहानुभूति रखने वाले एक सरकारी अधिकारी ने अपने प्रयासों से निवाली के डाकबंगले में संस्था शुरू

करने की स्वीकृति दिला दी थी । डाकबंगले के सामने कन्या आश्रम का बोर्ड लग गया था । दो प्रमुख गतिविधियां प्रारंभ करना तय किया गया । एक तो वनवासी स्त्रियों की स्वास्थ्य सेवा और दूसरा वनवासी कन्याओं की शिक्षा का प्रबंध । लेकिन आसपास के गांव वाले तो इसे संदेह की निगाह से देख रहे थे । लोग न तो अपने परिवार की लड़कियों को यहां पढ़ने भेजना चाहते थे और जो दो-चार लड़कियां आ भी गयी थीं, वे यहां रुकना नहीं चाहती थीं । धीरे-धीरे परिस्थिति बदली । कांता बहन और आश्रम ने लोगों का विश्वास जीता ।

विश्वास की श्वास

अविश्वास के इस प्रारंभिक दौर में एक वृद्ध वनवासी रोज आकर आश्रम के दरवाजे पर बैठ जाते । उनका नाम था गार्धी । वनवासी समाज के संकट के सारे उतार-चढ़ाव मानो गार्धी के चेहरे पर झुर्रियों की तरह दर्ज थे । उनकी धीमी लेकिन दृढ़ आवाज, लगता था मूक हो रहे समाज को वाणी दे रही थी । अपनी इस आवाज में वे कांता बहन से आश्रम, आश्रम के लक्ष्य के बारे में तरह तरह के सवाल पूछते । कांता बहन भी उनको पूरे धीरज के साथ जवाब देतीं । धीरे धीरे गार्धी भाई ने आश्रम और आश्रम से जुड़े कार्यकर्ताओं के बारे में, उनके उद्देश्यों के बारे में हर चीज समझ ली । इस तरह शुरू में शंकालु से दिख रहे वृद्ध गार्धी अब उस क्षेत्र में आश्रम के सबसे बड़े समर्थक और प्रचारक बन गये ।

अब गार्धी भाई गांव-गांव जाते, घर-घर जाकर इस आश्रम के बारे में लोगों को बताते और उनसे उन परिवारों की लड़कियों को आश्रम भेजने के लिए समझाते । एक ऐसे ही दिन गार्धी भाई ने आश्रम की कार्यकर्ताओं को अपने गांव आने का निमंत्रण भेजा और साथ ही उन्हें आश्रम से गांव तक लाने के लिए सजी-धजी बैलगाड़ी भेजी । आश्रम में उस समय केवल चार लड़कियां रहने आ सकी थीं । गार्धी भाई के गांव में उस दिन हुए उस छोटे-से आत्मीय समारोह ने आश्रम और वनवासी समाज के बीच में खड़ी संदेह और अपरिचय की दीवार को तोड़ दिया । धीरे-धीरे आश्रम में आने

वाली लड़कियों की संख्या बढ़ चली और अब वह डाकबंगला भी छोटा पड़ने लगा, जो अभी कुछ ही पहले तक खाली पड़ा रहता था । निवाली की छोटी-सी पहाड़ी पर बने उस छोटे-से डाकबंगले से आश्रम को हटाकर अब नीचे मैदान में बने लोकनिर्माण विभाग के एक अन्य बड़े भवन में स्थानांतरित किया गया ।

निवाली का विस्तार :

उसी वर्ष आश्रम ने वनवासी समाज के साथ और गहरे संबंध बनाने के लिए एक महिला शिविर का आयोजन किया । इसमें आसपास के गांव से स्त्री-पुरुषों को बुलाया गया ताकि वे खुद आकर आश्रम को देख समझ सकें । 20 दिन तक चले इस लंबे शिविर का नतीजा बहुत अच्छा रहा । और धीरे-धीरे आश्रम के प्रति लोगों का सम्मान बढ़ता गया । आश्रम की कीर्ति फैलने लगी और चारों तरफ से लोग अपनी लड़कियों को यहाँ भेजने के लिए तैयार होने लगे । अब तक बनायी गयी जगह फिर छोटी पड़ने लगी और एक बार फिर सन् 60 में भवन का विस्तार करना पड़ा ।

तब से आज तक आश्रम ने पीछे मुड़कर नहीं देखा है । चार लड़कियों से शुरू हुए आश्रम में आज लगभग 500 लड़कियां रहती हैं । यह संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही है और साथ ही नयी नयी गतिविधियां भी जुड़ती जा रही हैं । सन् 53 में सचमुच एक छोटे से पौधे की तरह लगा निवाली आश्रम वटवृक्ष की तरह यहां फैल गया है और इसकी अनेक शाखाएं अपने अपने ढंग से अपने को जड़ों में बदलकर स्वतंत्र रूप से भी पनप रही हैं और साथ ही अपने मूल वृक्ष को भी पोषित कर रही हैं ।

आश्रम ने अपनी स्थापना के समय से ही अपने को वर्तमान शिक्षा बनाम बुनियादी शिक्षा की बहस से अलग रखते हुए भी वनवासी समाज, विशेषकर वनवासी कन्याओं के बीच में शिक्षा के प्रसार को अपना लक्ष्य माना है और इस मापदंड के अनुसार साधनसंपन्न सभी प्रयासों को पीछे छोड़कर गजब की सफलता और कीर्ति अर्जित की है । ऊपरी तौर पर वर्तमान शिक्षा पद्धति

से कहीं भी अलग न जाते हुए भी, मान्य सरकारी पाठ्यक्रम की लीक पर चलते हुए भी आश्रम ने वनवासी समाज की इन लड़कियों के लिए नये रास्ते खोले हैं ।

सरकारी कामों पर प्रभाव :

देश की शिक्षा के ऐसे बहुत कम प्रयोग होंगे जिनमें किसी गैरसरकारी प्रयास का पड़ोसी सरकारी प्रयास पर इतना अधिक असर पड़ा हो कि स्वयं सरकार अपने विद्यालय को भी गैरसरकारी हाथों में सौंप दे-- यह काम इतना आसान नहीं है । एक ही जिले में चल रहे उस गैरसरकारी निवाली कन्या आश्रम और सरकारी पाठशाला में एक ही पाठ्यक्रम था और यदि अंतर भी रहा होगा तो आश्रम के हिस्से सरकार के मुकाबले कम ही सुविधाएं रही होंगी । फिर भी छात्राओं से लेकर उनके पालकों तक ने, पूरे समाज ने, कुछ वर्षों के अनुभवों से यह पाया कि आश्रम का संचालन, वातावरण बेहतर है । धीरे-धीरे सरकार ने भी भले ही अनिच्छा से, लेकिन स्वीकार किया कि उस क्षेत्र में आश्रम के मुकाबले अपना विद्यालय और छात्रावास भी चलाना निरर्थक है । आज सरकार ने निवाली की सरकारी पाठशाला और उससे लगभग 37 कि.मी. दूर धनौरा, वरला (लगभग 67 कि.मी.) नामक गांव का स्कूल और छात्रावास भी आश्रम को सौंपने की तैयारी पूरी कर ली है । निश्चित ही आश्रम ने यह कीर्ति शिक्षा में किसी नये प्रयोग के कारण नहीं बल्कि वनवासी समाज के बीच अपनी अन्य गतिविधियों, अपनी विशिष्ट शैली के कारण अर्जित की है । उनके साथ समरस होने की कोशिश करना इसका मुख्य आधार है । दूसरा आधार है खुला और साफ सुथरा संयोजन और विश्वसनीय हिसाब-किताब ।

स्वावलंबन बनाम आर्थिक स्वावलंबन :

जहां तक पैसे का संबंध है आश्रम के लिए ऐसा स्वावलंबन एक दूर का सपना है । ऐसे घरों की लड़कियों को पढ़ाना हो, जिनका सब कुछ लुट गया हो, निपट गरीबी और असहायता जिनकी नियति बना दी गयी है-- तो स्वावलंबन की साधना एक बेहद कठिन काम है । इसलिए आश्रम ने प्रारंभ से ही अपनी मातृ संस्था कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट और विभिन्न शासकीय विभागों के वित्तीय आधार पर अपना काम आरंभ किया और उसी आधार पर अपना विस्तार किया और आज उसी शासकीय आधार को पूरी ईमानदारी से अपनाते हुए आगे बढ़ रहा है ।

जिस पिछड़े माने गये वनवासी क्षेत्र में कन्याओं की पढ़ाई का कोई अवसर ही नहीं था उसमें आज निवाली आश्रम के कारण सन् 53 से 87 तक 2500 लड़कियां पढ़-लिखकर निकली हैं और समाज के हर तरह के काम में अपनी ठीक जगह बना सकी हैं । (देखिए तालिका । और 2) आश्रम से निकली ये वनवासी लड़कियां आज वकालत से लेकर शिक्षण, विभिन्न शासकीय सेवाओं, समाज सेवा आदि में कार्यरत हैं । इनमें से अनेक ने आश्रम द्वारा उपलब्ध अध्ययन के अवसरों को पूरा करने के बाद स्वतंत्र रूप से पढ़ाई-लिखाई जारी रखी है और जिसे आज उच्च शिक्षा माना जाता है, उसकी भी ऊंचाइयां नापी हैं । तालिका 1 आश्रम से निकलकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत छात्राओं की एक झलक देती है ।

जिस वनवासी समाज के लिए आधुनिक मानी गयी इस शिक्षा के दरवाजे खुले नहीं थे उसकी इन कन्याओं ने आश्रम से निकलकर यदि इतने आत्मविश्वास के साथ अपनी जगह बनायी है तो उसके पीछे मूल कारण है आश्रम की एक भिन्न किस्म की जीवन पद्धति । आश्रम की दिनचर्या सुबह से शाम तक एक आत्मीय वातावरण में उन्हें कड़े अनुशासन में जीना सिखाती है । इस वातावरण में उनमें पीढ़ियों से छिपा स्वावलंबन मुखर होता है और परस्पर एक दूसरे की मदद करते हुए भी किस तरह आगे बढ़ा जा सकता है इसका अनुभव कराता है ।

एक आर्थिक पक्ष छोड़ दें तो इतने बड़े आश्रम की व्यवस्था, जहां 3 वर्ष से 16-17 वर्ष की लगभग 500 लड़कियां रहती हों बिना स्वावलंबन के सध नहीं सकती । पूरे आश्रम की साफ-सफाई आदि के लिए आश्रम की कुल लड़कियों को, विभिन्न 34 टोलियों में बांटा गया है । हरेक टोली में 15 छात्राएं होती हैं । उम्र के हिसाब से हर लड़की को तरह-तरह के कामों का संचालन और नियोजन करने का अभ्यास सहज मिलता जाता है । हर टोली के जिम्मे निश्चित किया गया काम 15 दिन बाद बदलकर दूसरी टोली को दे दिया जाता है । इस सामुहिक व्यवस्था में आश्रम की साफ-सफाई, भोजन आदि के प्रबंध की प्रारंभिक तैयारी तथा आश्रम से जुड़ी खेती और नर्सरी का काम भी शामिल है । सतत फैल रही कीर्ति के कारण आश्रम में आने-जाने वाले अतिथियों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है । दूर-दूर से आने वाले ऐसे अतिथियों की देखरेख और उनके भोजन आदि का सारा प्रबंध भी लड़कियां ही करती हैं । उन्हीं में से एक अतिथि मंत्री चुनी जाती है, जो अपनी टोली की मदद से अतिथियों का भोजन भी अलग से बनाती है ।

इस सामुहिक व्यवस्था के अलावा लड़कियां अपने निजी कामों में भी पूर्ण स्वावलंबन अपनाती हैं । छात्रावास के अपने-अपने कमरों की सफाई, कपड़े धुलाई आदि का काम भी लड़कियां स्वयं करती हैं । इन सब गतिविधियों के लिए भी एक निश्चित समय तय किया गया है । ऐसे मौकों पर पूरा आश्रम एक छोटे से कुएं के इर्द गिर्द इकट्ठा होता है और देखते ही देखते एक लय से सब कपड़े धुल जाते हैं ।

500 लड़कियों के भोजन को बनाने के लिए जरूर दूसरे साथियों की मदद ली जाती है । इस काम में 8 वनवासी स्त्रियों को रखा गया है । इसका कारण यह है कि इतनी बड़ी संख्या में लड़कियों का दो बार नाश्ता और दो बार भोजन बनाने में बहुत समय जाता है । यदि यह काम लड़कियां स्वयं करें तो उन्हें पढ़ने का समय नहीं बचेगा । जैसा कि आश्रम की दिनचर्या का वर्णन तालिका नं. 4 से पता चलता है कि 15-16 घंटों में से 7 घंटे तो स्कूल

की औपचारिक पढ़ाई में चले जाते हैं । बाकी समय सफाई, नर्सरी का काम, प्रार्थना, सामूहिक बैठक, खेलकूद, स्कूल के बाद की पढ़ाई आदि को पूरा करने में चले जाते हैं । यही अपने आप में काफी कड़ी दिनचर्या साबित होती है । ऐसे में नाश्ते और भोजन को पकाने में स्वावलंबन का आग्रह न रखकर आश्रम ने समझदारी का परिचय ही दिया है । फिर भोजन बनाने में 8 स्थानीय वनवासी महिलाओं को रोजगार मिला है यह भी ध्यान देने योग्य बात है । 500 लड़कियों के आश्रम में किसी न किसी को कोई न कोई शारीरिक तकलीफ भी घेरती है । ऐसी बीमार कन्याओं के लिए भी सादा और पथ्यकारी भोजन बनता है जिसे बनाती तो स्त्रियां हैं लेकिन बीमार के पथ्य से लेकर उसकी तीमारदारी स्वास्थ्य मंत्री और उसकी टोली करती है ।

विभिन्न गतिविधियां :

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि आश्रम की शुरूआत एक ओर तो कस्तूरबा ट्रस्ट जैसी स्वयंसेवी संस्था और उसकी समर्पित कार्यकर्ता तथा सहानुभूति रखने वाले कुछ सरकारी विभाग के कुछ अधिकारियों के कारण हुई । लेकिन फिर धीरे-धीरे उसमें निवाली के वनवासी समाज की रुचि भी बढ़ती ही चली गयी । प्रारंभिक गतिविधियों के बाद जैसे-जैसे विस्तार हुआ उसका आधार स्थानीय लोगों के योगदान पर ही पनपा । जैसे : जब बढ़ती हुई छात्राओं की संख्या के कारण जगह की कमी हुई तो निवाली कस्बे के मुस्लिम निवासी श्री हसन अली ने आश्रम से लगी अपनी 3 एकड़ जमीन दान में दी । उनका यह कदम बताता है कि ठेठ वनवासी काम में लगे आश्रम को अन्य जातियों के बीच भी कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है । इसी तरह आश्रम से 5 कि.मी. दूर तलाब नामक एक स्थान में वन विभाग ने अपने सब नियम तोड़कर आश्रम की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को ढाला और उसे खेती करने तथा पाठशाला और छात्रावास बनाने के लिए अपनी जमीन दी । किसी भी राज्य के वन विभाग अपनी जमीन खेती के

उपयोग के लिए नहीं देते हैं । बल्कि अनेक राज्यों में वन भूमि पर खेती के प्रश्न को लेकर वन-विभाग और वनवासियों के बीच में वर्षों से संघर्ष और तनाव की स्थिति बनी हुई है । ऐसे में वन विभाग द्वारा निवाली आश्रम को खेती के लिए अपनी वन भूमि देना एक अपवाद तो है ही और इस अपवाद के पीछे निवाली की साख ही है ।

एक अन्य उदाहरण में मुख्य आश्रम से 3 कि.मी. दूर झाखर गांव में भाई सिंह नामक वनवासी ने भी अपनी कीमती जमीन आश्रम के काम के लिए सहर्ष दान में दी । समाज और सरकार से मिले इस प्यार को आश्रम ने भी यथाशक्ति अपना कर्तव्य निभाकर वापस करने का प्रयत्न किया है ।

प्रारंभ में वनवासी कन्याओं की शिक्षा और वनवासी समाज के स्वास्थ्य की देखरेख जैसे दो मुख्य लक्ष्यों को लेकर प्रारंभ हुआ आश्रम आज एक बहु-आयामी केंद्र बन गया है ।

यों तो वनवासी छात्राओं की पढ़ाई-लिखाई और खाने पीने का सारा खर्च अनुदानों से पूरा होता है । लेकिन बड़ी बड़ी लड़कियां पढ़ते-पढ़ते खुद कमा भी सकें, इस खयाल से उनके बीच सिलाई और बुनाई की गतिविधियां भी चलती हैं । इस तरह बड़ी लड़कियां आश्रम की ही अन्य लड़कियों की पोशाक आदि सी-कर 75 से 100 रुपये तक कमा लेती हैं । आश्रम ने आसपास की महिलाओं को घर बैठे ठीक रोजगार जुटाने के लिए सिलाई कक्षाओं को बाहर की महिलाओं के लिएभी खोला है । इस गतिविधि को मध्यप्रदेश सरकार की ओर से आवश्यक आर्थिक अनुदान मिलता है । बच्चों द्वारा सिये गये कपड़े सरकार स्वयं खरीद कर आश्रम को बाजार में भटकने से मुक्त कर देती है ।

इसी तरह आसपास की महिलाओं को संगठित करके बड़ी, पापड़, मसाले आदि बनाने और बेचने का काम भी चल रहा है । अब यह काम काफी बढ़ चुका है और इसका संचालन अब बाकायदा महिला सहकारी समिति करती है । शांति महिला गृह उद्योग नामक इस समिति में 500 महिला सदस्याएं हैं । ऊपरी तौर पर सामान्य-सी दिखने वाली यह

गतिविधि कई परिवार की महिलाओं को अपना घर चलाने के लिए थोड़ी-बहुत ही सही लेकिन बहुत आवश्यक आर्थिक मदद जुटाने में सहायक बनती है । आश्रम "शांति महिला गृह उद्योग" द्वारा बनायी गयी कई चीजें जैसे मसाले और पापड़ आदि अपने रसोई घर के लिए सीधे खरीदकर उनकी मदद करता है । महिला गृह उद्योग को बिना किसी झंझट के आश्रम के रूप में एक थोक खरीदार और घरेलू बाजार मिल जाता है तथा आश्रम को भी भरोसेमंद, शुद्ध और साफ-सुथरे मसाले ठीक दाम पर मिलते हैं ।

पूजा वाटिका :

अपनी कीमती वन संपदा, उपजाऊ खेत आदि छिन जाने के कारण यहां के वनवासी भी निपट अभावों में जीवन जी रहे हैं । कभी का सम्पन्न और स्वस्थ समाज आज कई तरह के रोगों का शिकार बन जाता है । इस क्षेत्र में पोलियोग्रस्त शिशुओं की काफी बड़ी संख्या है ।

एक बार आश्रम की बहनें जनसंपर्क के लिए जोगबाड़ा गांव गयी थीं । वहां उन्होंने देखा कि एक 4 साल का बच्चा घिसटतेघिसटते आ रहा है । उसके दोनों पैर पोलियो के कारण बर्बाद हो चुके थे । ऐसे बच्चे को देख कांता बहन को लगा कि क्या हमारा आश्रम इनके लिए कुछ भी नहीं कर सकता ? माता-पिता बच्चे को आश्रम भेजने के लिए तैयार हो गये । फिर आश्रम ने उसे अपने बालघर में रखा और उसका पालन-पोषण किया । लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होने लगा कांता बहन की चिंता बढ़ने लगी । नियमानुसार कन्या आश्रम में बालघर के अलावा कोई भी लड़का नहीं रखा जा सकता । प्रकाश नामक यह बच्चा बालघर की उम्र पार कर चुका था तब उसका क्या करें ? कठोरता से नियमों का पालन करें और उसे घर भेज दें या उसकी मदद तब तक करते रहें जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो जाता । वनवासी कन्याओं के लिए मां बन चुकी कांता बहन भला इस लड़के के लिए कैसे सौतेला व्यवहार करतीं । उन्होंने तय किया कि आश्रम से 3 कि.मी. दूर झाखर में वे क्षेत्र के ऐसे ही अपंग बच्चों के लिए नया आश्रम खोलेंगी । निवाली कन्या आश्रम के नियम भी नहीं टूटेंगे और मन भी नहीं

टूटेंगे ।

इसी क्षेत्र के एक संपन्न व्यापारी वसंत भाई अग्रवाल ने इस नाजुक परिस्थिति में आश्रम की सहायता की और ऐसे 8 अपंग बच्चों के लालन-पालन का पूरा खर्च उठाना तय किया ।

पूजा वाटिका नाम से जाना गया अपंग बच्चों का यह आश्रम आज ऐसे 50 बच्चों के लालन-पालन और शिक्षा की व्यवस्था कर रहा है । आश्रम ने इन बच्चों को इंदौर और दिल्ली के विशेषज्ञ चिकित्सकों को दिखाया और इनमें से कुछ का शल्य चिकित्सा द्वारा इलाज कराकर उनकी स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार भी किया है ।

ये अपंग बच्चे अपंग होते हुए भी अपना खाना-पीना, साफ-सफाई और कुछ हद तक नर्सरी का काम भी करते हुए बहुत हद तक स्वावलंबी बन चुके हैं । इस निर्जन क्षेत्र में इन्हीं सबने मिलकर आज एक हरा-भरा बगीचा, नर्सरी और खेत तैयार कर लिया है । भूरी और नंगी पहाड़ियों के बीच उभरी हरियाली से परिपूर्ण यह पूजा वाटिका बहुत दूर से पहचानी जा सकती है ।

आश्रम के प्रारंभ में चलने वाली चिकित्सा सेवा अब बाकायदा एक छोटे-मोटे ग्रामीण अस्पताल का रूप ले चुकी है । रोगियों के साथ जिस संवेदना और सहानुभूति के साथ यहां पर बर्ताव किया जाता है, जिस प्रेम के साथ उनकी सेवा की जाती है उसके कारण आश्रम का यह छोटा-सा चिकित्सा केंद्र आज आश्रम की बगल की बिल्डिंग में बने बड़े सरकारी अस्पताल से भी ज्यादा लोगों को आकर्षित करता है । अक्सर जरूरत पड़ने पर सरकारी डाक्टर भी आश्रम में भरती गंभीर रोगियों को देखने अपना काम छोड़कर आते हैं और सलाह देते हैं ।

एक मंच :

आज निवाली आश्रम जिले में चलने वाली विभिन्न शासकीय योजनाओं और उनको चलाने वाले विभागों का भी समान मंच बन गया है । सरकार के ये विभिन्न विभाग समय-समय पर अपनी विभिन्न योजनाओं को वनवासियों तक पहुंचाने के लिए आश्रम में सभा, गोष्ठी, शिविर आदि करते हैं । अधिकारियों और लोगों के बीच की दूरी यहां आश्रम में आकर टूट जाती है । ऐसे अवसरों पर बड़ी संख्या में वनवासी स्त्री-पुरुष, छोटे से लेकर बड़े सरकारी अधिकारियों के सामने अपनी समस्याएं रखते हैं और उनसे बातचीत करते हैं ।

लोक अदालत :

आसपास के गांव में 35 वर्षों की साख के कारण मूलत: शिक्षा को फैलाने के लिए बनी यह संस्था आज न्याय दिलाने का भी एक सफल माध्यम बन गयी है । आश्रम में कांता बहन की अध्यक्षता में चलने वाली लोक अदालत में आपसी झगड़े सरलता से निपटाये जाते हैं और इस खुली अदालत में किसी भी पक्ष से कोई फीस नहीं ली जाती । सबसे ज्यादा झगड़े भूमि संबंधी विवादों और पारिवारिक-वैवाहिक संबंधों के आते हैं । लोक अदालत का कार्य क्षेत्र भी निवाली गांव न रह कर पूरा ब्लाक हो गया है । प्राय: ऐसे झगड़े पुलिस अदालत में जाते हैं । बरसों पड़े रहते हैं, पैसा भी बर्बाद होता है तिस पर न्याय भी नहीं मिल पाता । न्याय मिल जाये तो भी कटुता तो बढ़ ही जाती है, दोनों पक्षों में । लेकिन आश्रम की लोक - अदालत में न्याय बिना खर्च किये मिलता है, जल्दी मिलता है और दोनों पक्षों के बीच कटुता भी मिटती है ।

आश्रम में किसी भी शिकायत के आने पर लोक अदालत के कार्यकर्ता संबंधित मामले की पूरी छानबीन करते हैं । फिर दोनों पक्षों को आश्रम बुलाते हैं । कांता बहन दोनों तरफ के तर्कों को शिकायतों को सुनने के बाद सभी की उपस्थिति में ऐसे समाधान सुझाती हैं जिसे सभी स्वीकार करें ।

निवाली लोक अदालत ने पुलिस, महाजन और वकीलों तक की ओर से होने वाले अत्याचार को कम किया है । श्री बी.बी.चटर्जी द्वारा निवाली लोक अदालत पर किया गया एक अध्ययन बताता है कि आने वाले मामलों का 25 प्रतिशत महाजनों के ऋणों से संबंधित विवाद होते है । अन्य 30 प्रतिशत विवाद जमीन के होते हैं और 12 प्रतिशत परिवार के झगड़ों से संबंधित होते हैं । अनेक मामलों में लोक अदालत ने बरसों से चली आ रही दुश्मनी को मिटाया है और घर परिवार तथा गांव में शांति लौटाई है ।

पिछले कुछ समय से आश्रम स्थानीय गांव में महिला मंडलों का भी गठन कर रहा है । इनका उद्देश्य गांव-गांव में महिलाओं को संगठित करके स्थानीय स्तर पर उनकी समस्याओं को सुलझाना औरउन्हें रचनात्मक कामों में मोड़ना है । पिछले एक वर्ष से यहां आंगनबाड़ी योजना भी चालू हुई है । इसमें 50 महिलाएं प्रशिक्षण पा रही हैं ।

लुप्त होती कला को जीवन :

वनवासी क्षेत्रों में कला तो जीवन का हिस्सा थी । लेकिन वनवासी संस्कृति के उजड़ते जाने का असर वनवासी कला पर भी पड़ा और धीरे - धीरे बाजार की संस्कृति ने उनके रोम-रोम में रची-पची कला की भावना को अपने बाजारू रंगों और प्लास्टिक से ढंक दिया । आश्रम इस स्थिति से काफी चिंतित था । पिछले वर्षों कांता बहन के प्रयासों से इस क्षेत्र की कला और कारीगरी को बचाने के जो प्रयास आरंभ हुए हैं वे इसी बात की ओर संकेत करते हैं कि भले ही आश्रम ऊपरी तौर पर वनवासी कन्याओं की शिक्षा का केंद्र दिखता हो लेकिन अंततः उसकी चिंता तो पूरा वनवासी समाज ही है ।

पिछले तीन वर्षों से आश्रम साधनों के अभाव में धीरे-धीरे विलीन होती जा रही हस्तकला को भी बचाने का प्रयत्न कर रहा है । बहुत-से

अच्छे स्त्री-पुरुष कारीगर आश्रम की ओर से मिलने वाली सुविधा का लाभ उठाकर अपने यहाँ की आकर्षक चीजें बना रहे हैं और आश्रम के माध्यम से उसे बाहर लाकर बेच रहे हैं । ऐसी चीजों की बिक्री की व्यवस्था आश्रम ने दस्तकार बाजार के जरिये की है । पिछले 3 वर्षों में आश्रम ने इन कलाकारों की चीजों को लेकर 6 दस्तकार बाजारों में भाग लिया-- दिल्ली, बंबई और मद्रास के दस्तकार बाजारों में शामिल हुआ है और विशेष तौर पर बांस की बनी सुंदर और विशिष्ट टोकरियां, धनुष - बाण और सबसे साधारण मानी गयी गिलट धातु से बने अति सुंदर गहने बहुत लोकप्रिय हुए हैं ।

छात्राओं के बीच पढ़ाई के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास का भी पूरा-पूरा खयाल रखा जाता है । राज्य में विशिष्ट अवसरों पर होने वाले सांस्कृतिक समारोहों में -- कालीदास समारोह, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि अवसरों पर आश्रम की छात्राओं का दल प्राय: पहला स्थान अर्जित कर लौटता है । आश्रम अन्य बातों के साथ खेलकूद पर भी सीमित साधनों के बाद भी जितना संभव हो सकता है उतना जोर देता है । आश्रम में आठवीं कक्षा में पढ़ रही कु. शांता बढ़डा ने भाला फेंकने में विशेष योग्यता अर्जित की है और पिछले दिनों राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं को पार करके राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने गौहाटी गयी थी ।

यों तो आश्रम अपनी इन विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आसपास के गांव से संपर्क बनाये रखता है लेकिन वह छात्राओं के परिवारों से विशेष संपर्क बनाये रखने के लिए वर्ष में एक बार पालक सम्मेलन बुलाता है । उस अवसर पर पालकों को आश्रम की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी जाती है, उनके परिवार की, छात्राओं की प्रगति बतायी जाती है और साथ ही उन्हें वनवासी कल्याण की विभिन्न योजनाओं की भी जानकारी दी जाती है । इस अवसर का उपयोग सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए भी किया जाता है । ऐसे पालक सम्मेलनों में लगभग 500 पालक आते हैं ।

समाज के बीच शिक्षण :

एक तरफ तो आश्रम विभिन्न शासकीय योजनाओं को लोगों तक पहुंचाने का काम करता है तो दूसरी तरफ वह ऐसी सरकारी योजनाओं के विरोध में भी लोगों को तैयार करता है जो उनके हित में नहीं हैं । इसका एक सटीक उदाहरण है नर्मदा के बांध । पिछले एक वर्ष से आश्रम इन बड़े बांधों के कारण डूब में आने वाले आसपास के गांवों में लोगों को संगठित करने का काम कर रहा है ।

आश्रम की ओर से 6 कार्यकर्ता गांव में डूबने वाली चल-अचल, व्यक्तिगत और सार्वजनिक सम्पत्ति का ब्यौरा इकट्ठा कर रहा है और उसकी कीमत आंक रहा है ताकि मुआवजे के समय लोग ठीक से संगठित हो सकें । यह सर्वे आश्रम इसी क्षेत्र के एक अन्य जिले में बनी "नर्मदा घाटी नव निर्माण समिति" के साथ मिलकर कर रहा है ।

आज पश्चिम खरगौन के उस वनवासी क्षेत्र में आश्रम अपनी जड़ें जमा चुका है । लेकिन बहुत ही कम लोगों को इस बात का अंदाज है कि पिछले 35 वर्षों से यहां लगभग तपस्या-सी कर रही कांता बहन यहां की नहीं हैं । वे उत्तरप्रदेश के मेरठ से समाज के काम में आदरणीय ठक्कर बापा के कारण आयीं । अपने प्रारंभिक दिनों में उन्होंने पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में भारत-पाक बंटवारे से उजड़े परिवारों की सेवा की । उसी दौर में उन्होंने आरोग्य सेविका का प्रशिक्षण लिया और तभी उनका संपर्क कस्तूरबा ट्रस्ट से हुआ । यही संपर्क उन्हें निवाली तक लाया जिसका वर्णन प्रारंभ में कर चुके हैं ।

आज से 35 वर्ष पहले जब उन्होंने एक स्थापित संस्था की सुविधाजनक सेवा छोड़कर सड़कों से कटे घने जंगल में बसे एक ऐसे इलाके में आना तय किया तो उसके कारण काफी विवाद भी उठा । संस्था के संरक्षकों ने संभवत: ऐसी कम उम्र की और अनुभव में "कच्ची" लड़की को यहां अकेले न भेजने में ही अपना कर्तव्य माना होगा । फिर भी कांता बहन नहीं मानीं

और फिर धीरे धीरे उनके इस कठिन संकल्प को उस समय के प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ता कृष्णदास जाजू जी का भी पूरा समर्थन मिला । जिसे उस समय सब लोग अलग अलग कारणों से निवाली जाने से रोक रहे थे आज वही निवाली वनवासी कन्याओं की शिक्षा के नक्शे पर एक ऐसी जगह बन गया है जहां वे सभी लोग जाते हैं जिनका महिलाओं की शिक्षा से -- चाहे वह औपचारिक हो या अनौपचारिक, बाल शिक्षा हो या प्रौढ़ शिक्षा, बुनियादी हो या सरकारी पाठ्यक्रम की शिक्षा हो-- जरा भी ताल्लुक हो ।

आश्रम का प्रभाव :

शिक्षा में प्रचलित पद्धति से हटकर कुछ नया ढूंढने वाली आंखों को इस आश्रम में कुछ नया शायद न दिखे । लेकिन शिक्षा के चालू ढांचे में रहते हुए भी एक छोटी सी संस्था आसपास कितना बदलाव ला सकती है, इसका निवाली आश्रम एक सुंदर उदाहरण है । यह प्रभाव आसपास और दूर-दूर तक कई स्तरों पर देखा जा सकता है -- ये स्तर हैं यहां से पढ़ लिख कर निकली छात्राएं, उनके अपने घर, उनके गांव और इन गांवों में प्रखंडों में, जिलों में काम करने वाले विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारी ।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि किस तरह से ये छात्राएं यहां से निकलने के बाद स्वतंत्र रूप से अपनी पढ़ाई जारी रख सकी हैं । लेकिन मुख्य जोर पढ़ाई का नहीं है । जैसे-जैसे आश्रम की स्थिति मजबूत होती गयी और छात्राओं की संख्या बढ़ती गयी, यही बढ़ी हुई संख्या आश्रम और उनके घरों और गांव के बीच में संपर्क की एक मजबूत कड़ी बनती गयी । इसका सबसे ज्यादा असर घरों और गांवों में शराब पीने की प्रथा पर पड़ा । यों इसका कोई व्यवस्थित अध्ययन तो नहीं हुआ है फिर भी सन् 1972 में आसपास के 9 गांवों में शराब को लेकर एकत्र की गयी जानकारी बताती है कि लगभग हर गांव में शराब की खपत में 60 प्रतिशत गिरावट आयी है । कहीं-कहीं तो यह उससे भी कम आंकी गयी है । यह उपलब्धि भी तब और भी बड़ी दिखती है जब पता चलता है कि

आश्रम ने शराबबंदी का कोई विशेष अभियान इस क्षेत्र में नहीं चलाया । प्रारंभ के कुछ वर्षों में आश्रम की तरफ से इस मामले में कुछ छुटपुट कोशिश जरूर हुई लेकिन इसका श्रेय कुल मिलाकर आश्रम के कारण धीरे-धीरे पैलने वाले प्रभाव को ही जाता है । जैसा कि इस परचे में पहले भी बताया गया है कि आश्रम मध्यप्रदेश शासन के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरी तरह से स्वीकार करता है । इस तरह प्रारंभ से ही बाकायदा औपचारिक पढ़ाई शुरू हो जाती है । लेकिन इस औपचारिक-सी दिखने वाली पढ़ाई का भी मुख्य आधार बुनियादी शिक्षा ही है । इसीलिए तो निवाली आश्रम में पढ़ने वाली वनवासी छात्राएं मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित इसी तरह के दूसरे आश्रम विद्यालयों में पढ़ने वाली वनवासी छात्राओं से भिन्न किस्म का प्रशिक्षण पाती हैं । उन्हें एक बड़े लेकिन आत्मीय अनुशासन में अपने को ढालने का अवसर मिलता है । वे रोज सुबह साढ़े चार बजे जागती हैं और रात को दस बजे सोने से पहले तक हर क्षण किसी न किसी काम में, पढ़ाई में, गतिविधि में जुटी रहती हैं । सामान्य पाठ्यक्रम की पढ़ाई के अतिरिक्त उनकी यह लम्बी दिनचर्या अनेक सार्थक गतिविधियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जो उनके जीवन को पूरी तरह से खिलाने में सहायक बनती है । इन गतिविधियों में साफ-सफाई, खेती बाड़ी, पौधशाला, वानिकी, हस्तकला, सामाजिक काम, विभिन्न अवसरों पर आसपास और दूर के गांव में पदयात्राएं तथा स्वयं को समझते हुए आसपास के परिवेश को जानने का प्रयत्न और इस माध्यम से अपने समाजमें कुछ अच्छा करने के प्रयास शामिल हैं । यह अच्छाई ही आश्रम को, आश्रम की छात्राओं को अन्य ऐसी शासकीय शिक्षण संस्थाओं से अलग रख देती है ।

केवल पाठशाला ही नहीं :

इसलिए आसपास के गांव आश्रम को महज स्कूल या छात्रावास की तरह नहीं देखते । वे इसे काफी हद तक अपनी संस्था मानते हैं -- एक ऐसी संवेदनशील संस्था, जो उनके हर कष्ट में उनका साथ देगी । झगड़ा पटवारी से हो या वन विभाग से, वनवासी दौड़कर आश्रम आयेगा और मदद मांगेगा । प्रारंभ के कुछ वर्षों में तो आश्रम वन विभाग द्वारा वनवासियों पर होने वाले अन्याय से निपटने का एक प्रमुख स्थान बन गया था । लेकिन फिर लगता है कि आश्रम के बढ़ते प्रभाव को स्वयं वन विभाग ने मान्यता दी और ऐसी घटनाएं कम होने लगीं ।

इसी तरह गांव में पुलिस की मनमानी भी कम हुई है क्योंकि ऐसे अनेक मामलों में फंसे परिवारों ने आश्रम तक अपनी बात पहुंचायी और क्षेत्र के छोटे से लेकर बड़े पुलिस अधिकारी तक को अपनी गलती माननी पड़ी । ग्राम विकास की अनेक गतिविधियों में हो रहे भ्रष्टाचार को यहां आश्रम की उपस्थिति के कारण उतना फलने-फूलने का मौका नहीं मिलता जितना अन्य क्षेत्रों में मिलता है। बैंक द्वारा वनवासियों के बीच बांटे गये झूठे कर्ज और उनकी सच्ची वसूली की दर्दनाक घटनाएं भी आश्रम के कारण रुकीं और बाद में उनकी जांच भी हुई । प्रस्तावित अध्ययन के दौरान ही एक ऐसी घटना सामने आयी थी, जिसमें गल्ले के किसी व्यापारी से एक किसान ने लगभग एक क्विंटल बाजरा उधार लिया था । व्यापारी किसान पर 1800 रु. का कर्ज बताकर उसकी कीमती बैल जोड़ी खोलकर अपने घर ले गया था । घबराया किसान आश्रम दौड़ा आया । आश्रम ने व्यापारी को बुलवाया । एक छोटे से स्कूल और छात्रावास को चलाने वाली संस्था का इतना असर था कि व्यापारी आश्रम के बुलाने को टाल नहीं सका । उसने भी आश्रम पहुंचकर अपनी बात रखी । तब आश्रम ने दोनों पक्षों को एक साथ बैठाकर कुल लिये गये गल्ले का ठीक ठीक हिसाब किया और किसान की बैल जोड़ी वापस करायी ।

एक ही गांव में, एक ही क्षेत्र में बसने वाले ऐसे दोनों पक्षों के बीच होने वाले अन्यायों को समझदारी से रोकने की एक-एक छोटी घटना न जाने कितने अन्यायों को रोकने का स्वस्थ वातावरण बनाती है । इसलिए निवाली आश्रम का योगदान स्कूल के पाठ से सचमुच बाहर निकलकर समाज को छू लेता है ।

-0-

तालिका एक : विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी संस्थानों में कार्यरत आश्रम की छात्राएं

1- सहायक न्यायाधीश	1
2- लेखपाल	14
3- जिला, वनविभाग, ग्राम पंचायत और समाज कल्याण विभागों में लिपिक आदि	11
4- टेलीफोन ऑपरेटर	3
5- व्याख्याता, स्नातक विधालय	3
6- शिक्षिकाएं	10
7- प्राचार्या, माध्यमिक पाठशाला	3
8- पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक शिक्षिकाएं	72
9- महिला और बाल विकास अधिकारी	2
10- ग्राम सेविकाएं	3
11- वार्डन	7
12- सुपरवाईजर	2
13- सरकारी और गैर-सरकारी स्वास्थ्य कार्यकर्ता	22
14- आंगनबाड़ी कार्यकर्ता	67

तालिका दो : उच्च शिक्षा प्राप्त आश्रम की छात्राएं

एल.एल.एम.	1
एम.ए.बी.एड.	2
एम.ए.	19
बी.ए.बी.एड.	2
बी.ए.	41

तालिका तीन : दैनिक दिनचर्या*

4.00	प्रातः पहली घंटी
4.30	मुखमार्जन
4.30 से 5.30	अध्ययन
5.30 से 6.30	प्रातःकालीन प्रार्थना
6.00 से 7.00	सामूहिक सफाई
7.00 से 8.00	नाश्ता
8.00 से 9.30	स्नान ।सिलाई, बागवानी, टोलियों में बंटवारे अनुसार किया जाता है।
9.30 से10.30	भोजन
10.30 से 5.00	शाला
5.00 से 5.30	निजी कार्य
5.30 से 6.30	शाम का भोजन
6.30 से 7.00	शाम की प्रार्थना
6.00 से 8.00	खेलकूद व निजी कार्य
8.00 से10.00	अध्ययन
10.00	शयन

* रविवार : छात्राएं निजी साफ-सफाई, कपड़े धुलाई आदि के साथ-साथ टोलियों में बंटकर रसोईघर के लिए दाल/चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा तथा मसाले आदि बीनने का काम भी करती हैं ।

तालिका चार : पांचवीं कक्षा में छात्राओं की स्थिति

वर्ष	छात्राओं की संख्या	परीक्षा में सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रतिशत
1973	27	27	23	85.00
1974	23	22	20	90.09
1975	31	31	29	93.55
1976	32	32	27	84.36
1977	32	32	29	90.62
1978	23	21	16	76.00
1979	24	24	23	95.83
1980	27	27	24	88.88
1981	27	27	22	81.05
1982	31	31	27	87.00
1983	34	34	28	82.35
1984	34	34	33	97.00
1985	36	36	36	100.00
1986	38	38	30	78.94
1987	40	40	33	82.05

तालिका पांच : कक्षा आठवीं में छात्राओं की स्थिति

वर्ष	छात्राओं की संख्या	परीक्षा में सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रतिशत
1973	36	36	27	75.00
1974	40	40	29	72.05
1975	33	32	24	75.00
1976	32	32	13	40.62
1977	25	25	5	20.00
1978	37	37	13	35.13
1979	26	26	18	69.23
1980	28	26	13	50.00
1981	46	45	24	53.33
1982	46	46	27	57.17
1983	43	43	18	41.86
1984	68	68	41	60.03
1985	53	53	29	54.71
1986	39	39	30	76.92
1987	66	66	24	36.36

तालिका छ: : 1973 से पहले की स्थिति

वर्ष	कक्षा	छात्राओं की संख्या
1953-54	1	13
1954-55	1	17
1955-56	2	24
1956-57	3	24
1957-58	4	40
1958-59	5	40
1959-60	6	45
1960-61	7	45
1961-62	8	45
1962-63	8	45
1963-64	8	65
1964-65	8	83
1965-66	9	100
1966-67	10	133
1967-68	11	129
1968-69	8	178
1969-70	8	191
1970-71	8	209
1971-72	8	253
1972-73	8	282

तालिका सात : आश्रम की छात्राओं की ताजी स्थिति (1987-88)

कक्षा	छात्राओं की संख्या	
1	117	(दो वर्ग)
2	45	
3	49	
4	74	
5	55	
6	92	(दो वर्ग)
7	59	
8	69	(दो वर्ग)
9	25	
10	14	
11	8	
12	1	

टिप्पणी : बड़ी कक्षाओं में छात्राओं की संख्या में उतार-चढ़ाव का कारण है विभिन्न पारिवारिक परिस्थितियों के कारण स्कूल छोड़ने की मजबूरी । कुछ छात्राएं आश्रम छोड़ने के बाद भी निजी तौर पर इन परीक्षाओं में बैठती हैं जैसा कि तालिका 2 से साबित होता है कि 41 छात्राओं ने बी.ए. की परीक्षा पास की थी ।

इसे हम अपना सौभाग्य मानते हैं कि हमें इस अध्ययन के दौरान कस्तूरबा वनवासी कन्या आश्रम, निवाली के कार्यकर्ताओं, वर्तमान और भूतपूर्व छात्राओं, आश्रम के विभिन्न शुभचिंतकों से बहुत ही आत्मीय सहयोग मिला । कांता बहन, रामप्यारी बहन, उषा जोशी, गोमती बहन, मनोरमा बहन, कालिंदी बहन, मनोरमा मेनन और पुष्पा सिन्हा के मार्गदर्शन और सुझावों के बिना यह अध्ययन पूरा नहीं हो सकता था । हम उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं ।

आलेख : मंजुश्री मिश्र

इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट
5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली -110002

सितंबर 1988